गुप्तों का कला एवं साहित्य

- 29th Lecture by

Mamta Rani
History department
SNSRKS COLLEGE,
SAHARSA

06-05-2020.

Scanned with CamScanner

गुप्तों का कला एवं साहित्य

वास्तुकला :-

कला और साहित्य के विकास की दृष्टि से गुप्त काल को भारतीय इतिहास का क्लासिकी युग अथवा स्वर्णयुग कहा गया है। स्थापत्य एवं चित्रकला का जन्म हुआ था। देवगढ़ का दशावतार मंदिर भारतीय मंदिर निर्माण में शिखर का संभवतः पहला उदाहरण है।

→ शिखर युक्त मंदिरों का निर्माण गुप्तकाल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इस काल के मंदिरों के निर्माण में छोटी-छोटी ईंटों तथा पत्थरों का प्रयोग किया जाता था।

→ अजन्ता की गुफायें महाराष्ट्र में स्थित है। इनकी संख्या 27 है जिनमें कुछ 100 फीट गहरी है तथा घोड़े के नाल के आकार में खुदी है।

गुप्तकाल के प्रमुख मंदिर

स्थान	मंदिर/स्तूप
भूमरा	शिव मंदिर
तिगवा (जबलपुर)	विष्णु मंदिर
देवगढ़ (झांसी)	दशावतार मंदिर
शिरपुर	लक्ष्मणमंदिर (ईंटों का मंदिर)
उदयगिरि	विष्णुमंदिर
भीतरगांव (कानपुर)	ईंटों का मंदिर
सारनाथ	धमेख स्तूप (ईंटों का बना स्तूप)
भीतरी	ईंटों का मंदिर
नालंदा	बौद्ध विहार
नागोद (खोह)	शिव मंदिर

Scanned with CamScanner

→ आर्यभट्ट ने सर्वप्रथम शून्यवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और यह भी बतलाया कि पृथ्वी अपनी धुरीपर घूमतीहुई सूर्य के चारो ओर चक्कर काटतीहै। इसकाल के प्रमुख गणितज्ञ ज्योतिष विद्या मे भी निपुण थे। इनमें आर्यभट्ट प्रथम, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त तथा ब्रह्मगुप्त विशेष महत्व रखते थे।

→ छठी शताब्दी मे वाणभट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ अष्टांगहृदय की रचना की। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार मे आयुर्वेद का विद्वान और चिकित्सक धनवंतरि थे। इस काल का सर्वाधिक भव्य अवशेष दिल्ली का सुप्रसिद्ध लौहस्तम्भ है।

गुप्तकाल की महत्वपूर्ण रचनाएँ :-

पुस्तक	लेखक
→ ऋतुसंहार	कालिदास
कुमार संभवम	कालिदास
मालविकाग्निमित्र	कालिदास
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
हर्षचरित्र	वाणभट्ट
नागानंद	हर्षवर्द्धन
कादम्बरी	वाणभट्ट
अमरकोष	अमरसिंह
किरातार्जुनीय	भारवि
रघुवंशम	कालिदास
सूर्यसिद्धान्त	आर्यभट्ट
पंचतंत्र	विष्णुशर्मा
चरकसंहिता	चरक
पंचसिद्धांतिका	वराहमिहिर

=x=

Scanned with CamScanner

मूर्तिकला एवं चित्रकला

→ गुप्तकला में चित्रकला विकसित थी। गुप्तकाल के चित्रों के अवशेषों को बाघ की गुफाओं अजन्ता की गुफाओं तथा बादामी की गुफाओं में देखा जा सकता है। कुषाण कालीन मूर्तियों में शरीर के सौंदर्य का जो रूप था उसके विपरीत गुप्त काल की मूर्तियों में नग्नता नहीं है। गुप्तकालीन मूर्तिकारों ने मोटे उत्तरीय वस्त्र का प्रदर्शन किया है।

→ गंगा और यमुना की मूर्ति रूप गुप्तकाल की ही देन है। गुप्त काल की शिल्प कला का जन्म विशेषत: मथुरा शैली स्थापित प्रतिमानों पर आधारित था। वराह की वास्तविक आकृति कला का जन्म विशेषत: मथुरा शैली द्वारा स्थापित प्रतिमानों पर आधारित था।

→ वराह की वास्तविक आकृति में निर्मित मूर्ति एरण से प्राप्त हुई है जिसका निर्माण धन्यविष्णु ने किया था। अजन्ता के चित्र मुख्यत: धार्मिक विषयों पर आधारित हैं जबकि बाघ के चित्र मनुष्य के लौकिक जीवन से लिए गये हैं।

→ गुप्त मूर्ति कला के सर्वोत्तम उदाहरण सारनाथ की मूर्तियां और चित्रकला के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण अजन्ता बौद्ध कला के उदाहरण हैं। साहित्य-पुराणों का जो रूप अब प्राप्त होता है उसकी रचना गुप्त काल में हुई थी।

→ इस काल में अनेक स्मृतियों एवं सूत्रों पर भाष्य लिखे गए। अनेक पुराणों, रामायण तथा महाभारत को अंतिम रूप दिया गया। नारद, कात्यायन पराशर, बृहस्पति आदि स्मृतियों की रचना हुई।

→ विज्ञान के क्षेत्र में गुप्तकाल को शून्य के सिद्धान्त तथा दशमलव प्रणाली के विकास का श्रेय प्राप्त है।

Scanned with CamScanner